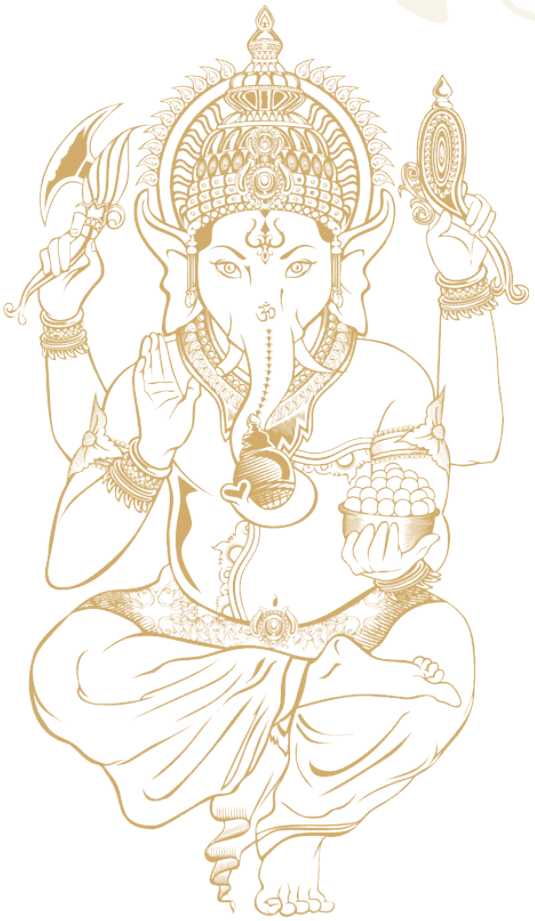

Ujjawal Choukse

12 Sep 2001

03:40 PM

Indore

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121091601

तिथि 12/09/2001 **समय** 15:40:00 **वार** बुधवार **स्थान** Indore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:52:34
अक्षांश 22:42:00 उत्तर **रेखांश** 75:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:39:33 घं
वेलान्तर	00:03:40 घं
सूर्योदय	06:12:12 घं
सूर्यास्त	18:32:46 घं
चैत्रादि संवत	2058
शक संवत	1923
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	10
नक्षत्र	आर्द्रा
योग	व्यतिपात
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ङ--
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

राहु 4वर्ष 9मा 2दि
शनि
15/06/2022
15/06/2041

शनि	18/06/2025
बुध	26/02/2028
केतु	06/04/2029
शुक्र	06/06/2032
सूर्य	19/05/2033
चन्द्र	18/12/2034
मंगल	27/01/2036
राहु	03/12/2038
गुरु	15/06/2041

योगिनी

मंगला 0वर्ष 3मा 5दि
सिद्धा
18/12/2021
17/12/2028

सिद्धा	29/04/2023
संकटा	17/11/2024
मंगला	27/01/2025
पिंगला	18/06/2025
धान्या	17/01/2026
भ्रामरी	28/10/2026
भद्रिका	18/10/2027
उल्का	17/12/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:55:36	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			25:50:14	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	स्वराशि	1.37	आत्मा	पितृ	साधक
चंद्र			16:28:38	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	0.96	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			08:02:13	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	0.97	कलत्र	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			21:29:37	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	स्वराशि	1.10	भ्रातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु			17:50:34	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	1.10	पुत्र	धन	जन्म
शुक्र			25:36:12	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	1.29	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि			20:53:59	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.52	मातृ	आयु	मित्र
राहु	व		08:20:11	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	उच्च राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		08:20:11	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	उच्च राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

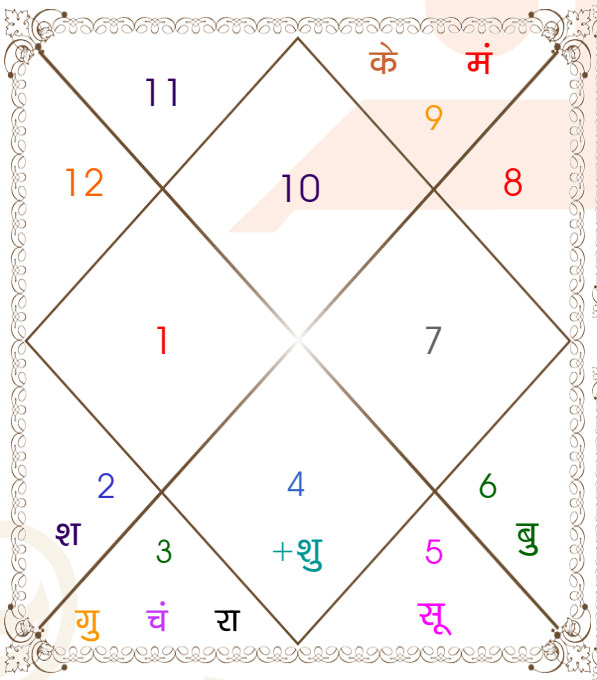

चन्द्र कुंडली

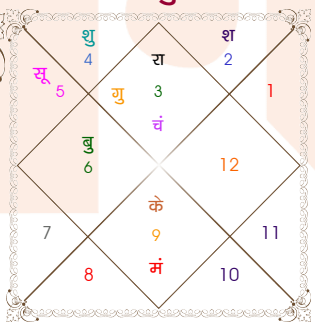

नवमांश कुंडली

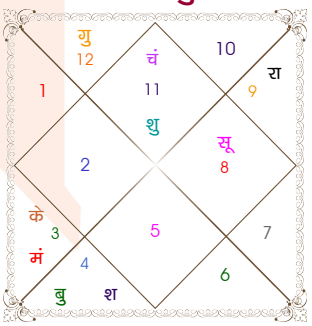

सर्वाष्टकवर्ग

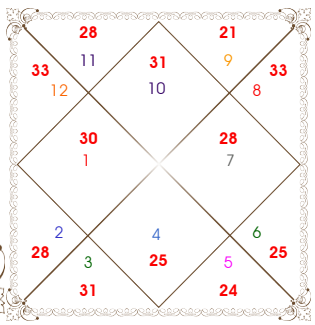

दशमांश कुंडली

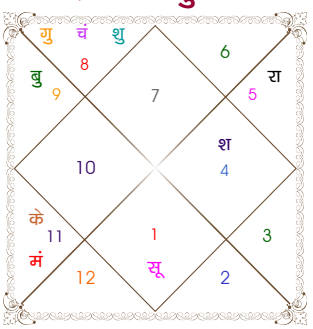

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

नक्षत्रफल

आप आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि श्वान, गण मनुष्य तथा आद्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ग" से प्रारम्भ होगा अतः आपका जन्म नाम गणेश, गणपति, गजेन्द्र आदि होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा कभी कभी छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। आप दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी यदा कदा प्रदर्शन करेंगे। आप समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ है। अतः आप के नेत्र अल्प लालिमा से युक्त होकर श्याम वर्ण के होंगे तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग सुडौल एवं स्वस्थ होंगे। आपके शरीर की लम्बाई पूर्ण तथा नासिका थोड़ी उठी हुई होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आपकी रूचि रहेगी तथा स्वाध्याय के द्वारा ही आपको कई शास्त्रों के विषय में ज्ञान रहेगा। दूतकार्य या सन्देशों के आदान प्रदान के कार्य को आप करने वाले होंगे। आप अत्यन्त ही तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा सम्मुख खड़े व्यक्ति के मनोभावों को जानने में शीघ्र ही सफलता प्राप्त करेंगे। अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त उत्तम तथा वाणी मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोता भी मुग्ध हो जाएंगे। आप हंसने तथा हंसाने में निपुण होंगे। संगीत तथा नृत्य के प्रति आपकी अभिरूचि रहेगी तथा इनके विषय में आप पर्याप्त ज्ञान रखेंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मत्स्य चिन्ह अंकित हो सकता है। साथ ही शरीर की नसें भी बाहर दृष्टिगोचर होंगी तथा आपकी लम्बाई भी पर्याप्त मात्रा में रहेगी। लेखन प्रतिभा से आप नैसर्गिक रूप से सम्पन्न रहेंगे तथा साहित्य के प्रति भी आपका रूझान रहेगा। आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। परन्तु

आपका अधिक समय विषय वासनाओं के सुख में लिप्त होकर व्यतीत होगा। भाग्य हमेशा आपका साथ देगा। परन्तु आप हमेशा वश में रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घायु को प्राप्त होंगे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन में हास्य प्रिय रहेंगे। भ्रमण करना या सुदूर क्षेत्रों की यात्रा करने में आपकी इच्छा होगी तथा घर में भी शान्ति तथा सन्तुष्टि का अनुभव करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे बहुत से लोगों से आपकी जान पहचान होगी तथा इनके मध्य आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे। विशेष रूप से स्त्रीवर्ग के आप आदर के पात्र समझे जाएगे। आप अपनी सुजनता तथा योग्यता से समाज में आदर तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप श्लिष्ट युक्त स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करने में सफल रहेंगे तथा अन्य जनों को उसे समझने में कोई परेशानी नहीं होगी। आप अपने स्वजनों, बन्धु वर्ग तथा सामाजिक लोगों की भलाई के कार्य करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रकृति पित तथा कफ मिश्रित होगी तथा आचरण उत्तम रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आखें हमेशा चंचलता से युक्त रहेंगी। नृत्य तथा संगीत के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित होंगे। आप अपने धनैश्वर्य, दयालुता तथा अच्छे व्यवहार से कीर्ति प्राप्त करेंगे। भाषण देने की कला में भी आप दक्ष होंगे। आप दृढ़निश्चयी प्रवृति के पुरूष होंगे एक बार जिस कार्य को अपने मस्तिष्क में सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगे चाहे मार्ग में कितनी ही विघ्न बाधाएं आएं। इसके अतिरिक्त आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।

गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप देवताओं तथा ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धावान होंगे तथा यथा समय इनकी पूजार्चना करते रहेंगे। कभी कभी आप के मन में अहंकार की भावना भी उत्पन्न होगी। दया तथा करूणा के भाव से आप पूर्ण रहेंगे तथा दीन दुःखियों की तन मन धन से सेवा तथा सहायता करने हेतु सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप एक बलवान पुरूष भी होंगे। आप विविध कार्यों या कलाओं के जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलेगी। आपका शरीर सुन्दर, स्वस्थ तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त आप के द्वारा अन्य बहुत से लोग सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

धनैश्वर्य मान सम्मान तथा समस्त सुखों का आप आजीवन उपभोग करेंगे। निशाने बाजी में आप अत्यन्त कुशल होंगे। आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा सम्पूर्ण नगरवासी आपका सम्मान एवं आदर करेंगे तथा आपके आज्ञाकारी होंगे। आपकी आँखें भी वृहताकार होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगे बिना कार्य के आप कभी नहीं रहेंगे। साथ ही आपका मन भी उत्साह से परिपूर्ण रहेगा जो कार्य करने में आपको गतिशील रखेगा। बहादुरी का भाव आप में होगा तथा आप हिम्मत पूर्वक समस्याओं का सामना करेंगे। लेकिन अपने भाइयों एवं बन्धुवर्ग से आपका सदैव संघर्ष चलता रहेगा। माता पिता के आप अत्यन्त प्रिय होंगे तथा निःस्वार्थ भावना से आप इनकी सेवा आजीवन करते रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, चतुष्पाद करण सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों स्वाती नक्षत्र, परिघयोग तथा चतुष्पाद करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ,

नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से जागृत रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक अशान्ति या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत रखने चाहिए साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, गुड़, घी, गेहूं इत्यादि पदार्थो का दान करना चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।